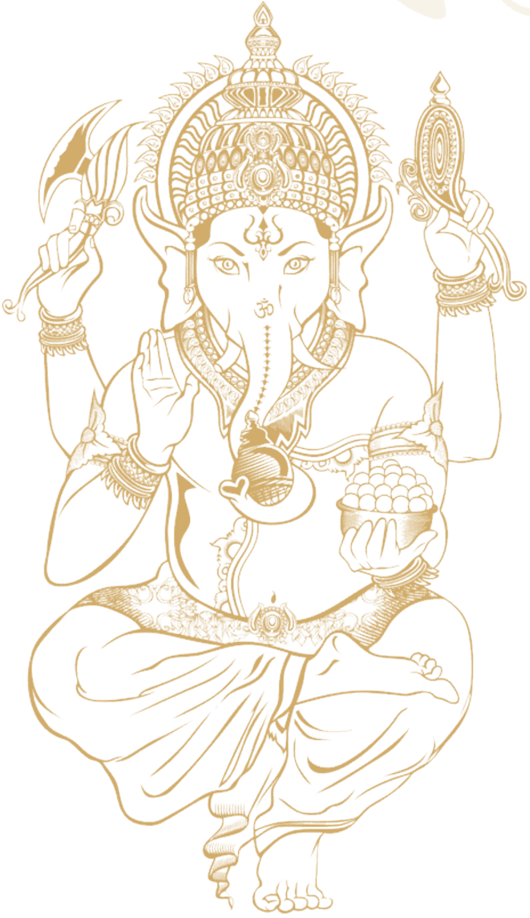

Mukesh kumar

21 Sep 2021

05:43 PM

Delhi

Model: Web-Pitridosh-Report

Order No: 121943601

तिथि 21/09/2021 **समय** 17:43:00 **वार** मंगलवार **स्थान** Delhi **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:09:22
अक्षांश 28:39:00 उत्तर **रेखांश** 77:13:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:08 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	17:24:15 घं	गण	मनुष्य
वेलान्तर	00:06:55 घं	योनि	गौ
सूर्योदय	06:09:05 घं	नाड़ी	मध्य
सूर्यास्त	18:18:47 घं	वर्ण	विप्र
चैत्रादि संवत	2078	वश्य	जलचर
शक संवत	1943	वर्ग	सिंह
मास	आश्विन	युंजा	अन्त्य
पक्ष	कृष्ण	हंसक	जल
तिथि	1	जन्म नामाक्षर	झ-झूलेलाल
नक्षत्र	उ.भाद्रपद	पाया(रा.-न.)	रजत-लौह
योग	वृद्धि	होरा	चन्द्र
करण	कौलव	चौघड़ियां	रोग

विंशोत्तरी

शनि 8वर्ष 6मा 28दि

शनि

21/09/2021
20/04/2030

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	21/09/2021
सूर्य	24/03/2022
चन्द्र	23/10/2023
मंगल	01/12/2024
राहु	08/10/2027
गुरु	20/04/2030

योगिनी

भद्रिका 2वर्ष 3मा 2दि

उल्का

25/12/2023
24/12/2029

उल्का	24/12/2024
सिद्धा	23/02/2026
संकटा	25/06/2027
मंगला	25/08/2027
पिंगला	25/12/2027
धान्या	24/06/2028
भ्रामरी	23/02/2029
भद्रिका	24/12/2029

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं-	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			23:07:56	कुंभ	पू.भाद्रपद	1	गुरु	शनि	---	0:00			
सूर्य			04:34:32	कन्या	उ.फ़ाल्गुनी	3	सूर्य	शनि	सम राशि	1.04	कलत्र	पितृ	प्रत्यारि
चन्द्र			10:38:50	मीन	उ.भाद्रपद	3	शनि	सूर्य	सम राशि	1.36	पुत्र	मातृ	जन्म
मंगल		अ	10:03:11	कन्या	हस्त	1	चन्द्र	चन्द्र	शत्रु राशि	0.98	ज्ञाति	भ्रातृ	साधक
बुध			29:41:31	कन्या	चित्रा	2	मंगल	शनि	स्वराशि	1.13	आत्मा	ज्ञाति	वध
गुरु	व		29:20:11	मक	धनिष्ठा	2	मंगल	शनि	नीच राशि	0.96	अमात्य	धन	वध
शुक्र			18:01:21	तुला	स्वाति	4	राहु	सूर्य	मूलत्रिकोण	1.18	भ्रातृ	कलत्र	मित्र
शनि	व		13:02:21	मक	श्रवण	1	चन्द्र	राहु	स्वराशि	1.28	मातृ	आयु	साधक
राहु	व		09:40:12	वृष	कृत्तिका	4	सूर्य	शुक्र	मित्र राशि		---	ज्ञान	प्रत्यारि
केतु	व		09:40:12	वृश्चि	अनुराधा	2	शनि	शुक्र	मित्र राशि		---	मोक्ष	जन्म

लग्न-चलित

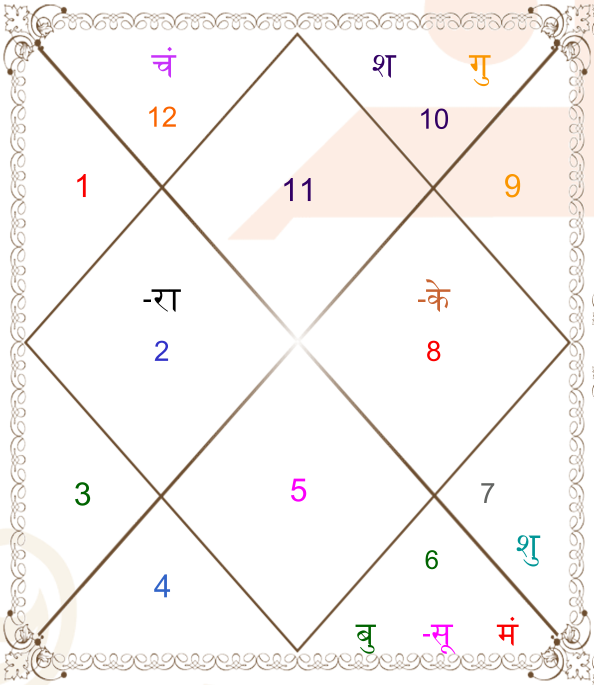

चन्द्र कुंडली

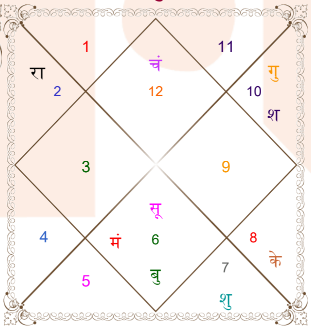

नवमांश कुंडली

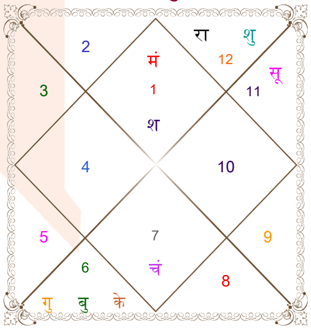

सर्वाष्टकवर्ग

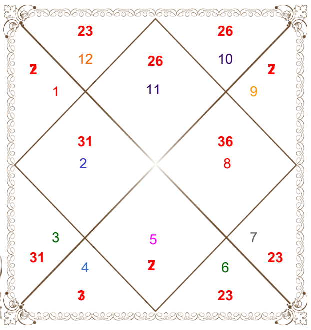

दशमांश कुंडली

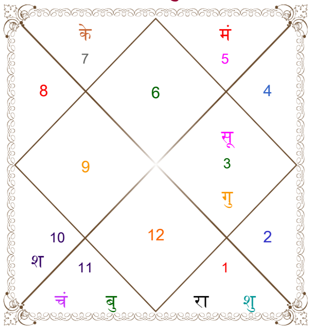

Mukesh Kumar Shakya
A3 Ring Road New Delhi
8178141028
mukeshshakya.futurepoint@gmail.com

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुंमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दु:खी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा शापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1- परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2- आनुवंशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3- परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4- परिवार में बच्चों द्वारा अपमान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5- गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6- परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।
7- परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फ़साद होना।
8- कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।

Mukesh Kumar Shakya
A3 Ring Road New Delhi
8178141028
mukeshshakya.futurepoint@gmail.com

9- बुरी आदतों की लत लग जाना।
10- परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11- शिक्षा में बाधाएं आना।
12- स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13- माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14- परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15- परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1- श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2- रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3- यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1- श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र-दक्षिणा आदि दें।
2- यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3- प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर क्षीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4- सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5- पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6- रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7- लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8- हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9- गया या त्र्यम्बकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10- नारायणबलि पूजा करवाएं।
11- पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

Mukesh Kumar Shakya
A3 Ring Road New Delhi
8178141028
mukeshshakya.futurepoint@gmail.com

12- पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13- श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1- पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2- पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3- पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4- पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5- पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6- बुजुर्गों का सम्मान करें।
7- पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8- घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9- पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।
- लग्नेश द्वादश भाव में स्थित है और उस पर शनि और राहु का प्रभाव है।

आपकी कुंडली में बुध, शुक्र और शनि के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है, अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किए गए पापकर्म आपके पितृदोष का कारण हैं। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आशीर्वाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजरे से मुक्त कर दें।

Mukesh Kumar Shakya
A3 Ring Road New Delhi
8178141028
mukeshshakya.futurepoint@gmail.com

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है, अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किए गए पापकर्म आपके पितृदोष का कारण हैं। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं तथा जीवनसाथी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलाएं।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है, अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किए गए पापकर्म आपके पितृदोष का कारण हैं। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ाएं व पूजा करें। शमी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतिकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलाएं।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है, परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षणों में से किसी प्रकार के कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है, तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभ कार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यम्बकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।